प्रश्न १—रस शब्द की व्याख्या करते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

रसवादी आचार्य रस को काव्य की आत्मा मानते हैं—'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है। 'रसो वै सः' इस वैदिक श्रुति के आधार पर रस को आनन्दस्वरूप ब्रह्म ही माना गया है तथा इस श्रुति वाक्य द्वारा भारतीय मनीषियों ने जीवन के परम उद्देश्य के रूप में अलौकिकानन्द स्वरूप तत्त्व (ब्रह्म-रस) का विवेचन किया है। 'रस' के विषय में भारतीय समीक्षा-शास्त्र का तो कहना ही क्या है क्योंकि प्राचीन काल से लेकर आज तक यह भारतीय आलोचना का आनदण्ड, बना हुआ है। रस तत्त्व की सत्ता का उदय तो भारतीय काव्य के सम्युदय के साथ ही हुआ था। इसके प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत श्रुति उपन्यास की जा सकती है—'रस ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति' रस की महिमा बड़ी व्यापक है। रस की महत्ता के विवेचन से पूर्व उसकी आश्यकता पर दो शब्द कह देना अनुपयुक्त न होगा—जीवन की गति यह स्पष्ट कर देती है कि रस जीवन का सार है और समस्त मानव-मात्र का जीवन रस के लिए है। जितने भी क्रिया-कलाप हैं, उनकी प्रेरणा और लक्ष्य, उनका उदय अस्त रस में ही है। साथ ही, साधनावस्था भी रस की अवस्था है, इसमें संदेह नहीं, यदि हम उसको इस रूप में परिणत कर सकें। यह निर्विवाद सत्य है कि रस जीवन के लिए आवश्यक तत्त्व है, इसी को प्रसाद जी ने अपने इन शब्दों से व्यक्त किया है—

काम मंगल से मण्डित श्रेय,
सर्ग इच्छा का है परिणाम।

दूसरे अर्थ में लोक में प्रचलित खाद्य पदार्थों में लवण, तिक्त, मधुर, कषायादि षड्रस तथा सांगीतिक रस, आयुर्वेदीय रस अथवा यत्र-तत्र-अन्यत्र प्राप्त होने वाले रस, जीवन के लिए आवश्यक तत्त्व हैं। संभवतः भरतमुनि ने रस शब्द की व्यापकता एवं महत्ता का अनुभव करके ही इस कारिका का निर्माण किया होगा—

"नहिं...रसादृते कश्चिदपि अर्थः प्रवर्त्तते।"

'रस' शब्द अनेकार्थक है जैसे—सार-आसव, धातु-भस्म, हर्ष-आनन्द। किन्तु इस शब्द के मुख्य अर्थ हैं: (१) पदार्थ-रस, जैसे: षड्रस अर्थात् कषाय, तिक्त कटु, लवण, अम्ल तथा मधुर। (२) आयुर्वेदीय रस, पारद, शरीर की एक धातु—'रसाच्छोणितं शोणितान्मांसं, मांसान्मेदो, मेदसः स्नायवः, स्नायुभ्योऽस्थीनी, अस्थिभ्यो मज्जा, मज्जातः शुक्रम्।' (गर्भोपनिषत २) (३) कामशास्त्र में रस रति—'रसो रतिः

प्रीतिर्भावो रागो वेगः समाप्तिरिति रतिपर्यायाः । संप्रयोगो रतं रहः शयनं मोहनं सुरत पर्यायाः । (कामसूत्रम् २।१।३२) । (४) भक्ति-रस अथवा ब्रह्मानन्द और (५) साहित्य रस शृंगार, वीर, करुण, हास्य अथवा काव्यानन्द आदि । (६) द्रव पदार्थ के लिए ; जैसे 'रसेन शामयंस्मति' जलसार, 'सोमइन्द्रियो रसः' सोमरस के लिए, 'इक्षान कामधीरस' लता रस के लिए । (७) स्वाद के पर्याय रूप में—'स्वादू रसो मधु पेयो वराय' हे इन्द्र तुम्हारे पीने के लिए यह मधु जैसा स्वादु मधुर सोमरस है ।

शब्दकोष में रस के निम्नलिखित अर्थ दिये गये हैं—

रसो गन्धे रसे, स्वादे तिक्ताहै विषरागयोः ।
शृंगारादौ द्रवे वीर्ये देहधात्वम्बुपारदे ॥

इसके अनुसार गन्ध, स्वाद, विष, राग, शृंगार, द्रव, वीर्य, अम्बु एवं पारद के अर्थ का बोधक भी 'रस' शब्द है ।

वस्तुतः तथ्य तो यह है कि जीवन के सुव्यवस्थित निर्माण के लिए 'रस' अनिवार्य है, रस से रहित जीवन ही नहीं रह जाता है चाहे वह आध्यात्मिक जगत् हो अथवा लौकिक जगत् । जीवन की गति भी रस के कारण ही है । जिस प्रकार नाना पदार्थों से तैयार किये हुये व्यंजन से रस की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार अनेक प्रकार के भावों से रस की निष्पत्ति होती है । जिस प्रकार अनेक प्रकार के व्यंजनों से युक्त अन्न का भोग करते हुए स्वस्थ पुरुष आनन्द की प्राप्ति करते हैं, उसी प्रकार विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का आस्वादन करते हुए सहृदयजन रस का आनन्द लेते हैं । प्रथम आस्वाद की प्रक्रिया स्थूल है और दूसरे की सूक्ष्म ।

'रस' शब्द 'रस' धातु और 'अ' (अच् अथवा घञ्) प्रत्यय से निष्पन्न हुआ है । अतएव 'रस' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है—'रस्यते आस्वाद्यते रसः' अर्थात् वह जो आस्वादित किया जाये, अथवा 'रस इति रसः' अर्थात् वह जो बहता है । इस प्रकार 'रस' में विशेषताएँ अन्तर्निहित हैं—आस्वाद्यत्व और द्रवत्व ।[1]

प्रस्तुत पृष्ठभूमि के साथ यदि हम रस के स्वरूप और उसकी परिभाषा पर विचार करें, तो आचार्य भरत के अनुसार हम कह सकते हैं कि विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है—'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' और यह रस की निष्पत्ति नाना भावों के उपागम से होती है—"नानाभावोपगमाद्रसनिष्पत्तिः । नाना भावोपहिता अपि स्थायिनो भावा रसत्वमाप्नुवन्ति ।"[2] दशरूपककार धनंजय ने भरत का समर्थन करते हुए लिखा है कि विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव आदि स्थायी भावों के साथ मिलकर स्थायी भाव रस रूप में निष्पत्ति होता है—

विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्व्यभिचारिभिः ।
आनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायी भावो रसः स्मृतः ॥

आचार्य मम्मट कहते हैं कि 'उन विभावादि के द्वारा अथवा उनके सहित